मनसा सेवा - 49

अव्यक्त बापदादा :- (20/12/1992)

➳ _ ➳ मन्सा-सेवा और वाचा-सेवा - दोनों करते हो या एक करते हो? डबल सेवा करते हो? सहज कौनसी लगती है? (कुछ ने मन्सा सेवा में और कुछ ने वाचा सेवा में हाथ उठाया, कुछ ने दोनों में ही हाथ उठाया) दोनों ही अभ्यास जरूरी हैं। क्योंकि जैसा समय वैसी सेवा कर सकेंगे। तो सभी जगह सेवा अच्छी चल रही है। विदेश में सतयुग के आदि की जो संख्या है उनमें से कितने तैयार किये हैं? एक लाख तैयार हुए हैं? इन्डिया 8 लाख करे तो फॉरेन एक लाख तो करे। कब करेंगे? कितना टाइम चाहिए? अभी सभी को समाचार गया है ना! एक मास में एक तो कर सकते हो ना। हो सकता है? तो 12 मास में कितने हो जायेंगे? समय आप मालिकों का इन्तज़ार कर रहा है। कम से कम 9 लाख तो तैयार चाहिएं ना।

➳ _ ➳ मन्सा और वाचा - डबल सेवा से जल्दी से जल्दी सेवा को बढ़ाओ। सेवा का उमंग अच्छा रहता है। लेकिन सदैव आगे बढ़ते रहना है। इसलिए सेवा का उमंग है और आगे उमंग को बढ़ाओ। बापदादा बच्चों के 'पुरुषार्थ की लग्न' और 'सेवा की लग्न'- दोनों को देख हर्षित होते हैं। इसलिए बहुत फास्ट गति से तैयार करो।

➢➢ जैसा समय, वैसी सेवा हो...

➳_ ➳ दिनचर्या अनुसार

→अमृतवेला सेवा

- आत्मा को जागृत करने की सेवा
- सकाश देने की सेवा
- आत्माओं को बुलाना, आह्वान करना...
- आत्माओं के मन से उलटे इम्प्रेशन हटाना...
- आत्माओं से रूह रिहान करना...

→ ज्ञान के चिंतन की सेवा

- जितना चिन्तन होगा ज्ञान का, उतनी ही श्रेष्ठ वाणी की सेवा कर पाएंगे...
- अमृतवेला के बाद सो जाने में बहुत बड़ा नुक्सान है...
- यह समय ज्ञान चिंतन का है...
- इस समय मन एकाग्र है... उस समय ज्ञान चिन्तन करना... मन को ईश्वरीय प्रेम से भरना...

→ कर्म

- हमारी चलन कैसी हो...

→ मधुबन से बाहर जाकर की जाने वाली सेवा

- अपनी दिनचर्या से एग्जाम्प्ल बनाना
- एक्यूरेट दिनचर्या हो मधुबन जैसी...
- जहाँ भी जाये दृष्टि, वृत्ति सकाश द्वारा सेवा हो...

- उनको कोई कला सीखाना...
- अपना अनुभव सुनाना...
  - अनुभव ब्राह्मणों की सबसे पावर फुल क्लास है...
- बीमार की सेवा करना...
- उदास को उमंग उत्साह से भर देना...
- समय पर सहयोग देने की सेवा...